तेजी ग्रोवर

हिन्दी या जंगली बादाम के लाल रंग

इस बार दिसम्बर के महीने में मेरा परिचय हिन्दी या जंगली बादाम के पेड़ से हुआ। मेरे नन्हे दोस्त तरुण और बबलेश लाला रंग के पके हुए बादाम लेकर मेरे घर आए। उन्हें फोड़कर हमने स्वादिष्ट "बिजी" खाई। लेकिन यह वाला लाल बादाम नरम गूदे वाला एक खट्टा-मीठा फल भी था। गूदा भी ऐसा बढ़िया खट्टा-मीठा कि बच्चों-बड़ों सबका मन ललचाए।

फिर तरुण बोला, "पता है तेजी अम्मा, चमगादड़ खाती है ये बादाम।" मैंने पूछा तुम्हें कैसे पता, तो वह बोला – चलो दिखाएँ। मुझे पेड़ भी देखना था सो हम उस मैदान में निकल आए जहाँ बंगाली बादाम के दो पेड़ थे। शानदार पेड़।

बहरहाल, मैदान में यहाँ-वहाँ बादाम बिखरे हुए थे लेकिन गूदा गायब था। बबलेश बोला, "अगर तो बच्चों ने खाए होते तो बादाम की 'बिजी' थोड़े न छोड़ते। फोड़कर खा न जाते! चमगादड़ कैसे फोड़े!" मैंने कहा, "सो तो ठीक है भइया, इस बात का पता तो हम लगा लेंगे, लेकिन गूदे से तो चित्र बनाने के लिए रंग मिलेगा न?" हमने बाड़े में बने उस मकान का दरवाज़ा खटखटाया और घर की मालकिन से दो-चार बादाम माँगे। उनका आँगन पके बादामों से भरा पड़ा था और उनका ज़रा भी मन नहीं था कि हमें दो-चार बादाम भी दें। मैंने कहा "आप इन्हें सुखा रही हैं, लेकिन 'बिजी' निकालने के बाद सूखे गूदे का क्या करेंगी? "हम चूल्हे में डाल देंगे।" "आप केवल एकाध बादाम ही हमें ले लेने दें। हम लोग रंग बनाकर देखना चाहते हैं।" "अभी तो मैं बघार लगा रही हूँ।" इतना कहकर वे भीतर चली गईं।

हम लोग बादामों के लिए कई दिन मारे-मारे फिरे और एक दिन हमारी तलाश फल लाई – बादाम के फल। उसी पेड़ की एक कटी और फलों से लदी डाली बाड़े के बाहर पड़ी मिल गई तरुण और बबलेश को। उन्होंने अपने बस्ते एक ओर रखे और झटपट सारे बादाम जेबों में भर लिए। इतने में बकरियाँ आईं, गाय भी आई और डाल पर लगे सारे पत्ते चट कर गईं।

हमने गुठली के ऊपर वाला गूदा घिस लिया। दस मिनट पानी में उबालने के बाद फिटकरी का एक टुकड़ा रंग में डाल दिया, जिससे रंग लगभग दुगना गाढ़ा हो गया।

जंगली बादाम सचमुच में चमगादड़ों का प्रिय आहार है। तरुण ने बताया, "चमगादड़ अपने पंजों से हेड़-हेड़ कर छिलका (गूदा) खाती है।" फल की गुठली पर कई ऊबड़-खाबड़ सुराख रहते हैं और "गूदा" कॉर्क जैसा होता है जिससे फल बहुत समय तक पानी में तैर सकता है। इस तरह शायद बहुत समय पहले यह पेड़ मलेशिया से अण्डमान द्वीपों तक आया होगा। और देखो तो क्या गज़ब कि होशंगाबाद में हमारे घर के सामने के मैदान में हमें यह बादाम का पेड़ मिल गया। मेरा अपना अनुमान है कि किन्हीं भी फलों के छिलकों और पेड़ की छाल से बने हुए रंग बहुत पक्के होते हैं।

बादाम के पेड़ की छाल में और पत्तों में भी रंग रहता है जिससे स्याही बनती है। अक्सर पूजा में सात रंग के पत्ते इकट्ठा किए जाते हैं और क्योंकि बादाम के पत्ते बहुत सुन्दर लाल और पीले भी हो जाते हैं, पूजा में इस वृक्ष की बड़ी महिमा है।

एक जापानी हाइकू
नदी किनारे के पेड़
क्या तेरे फूलों के अक्स
सच में बह जाते हैं?
–*बुसोन*

फोटो: महेश बसेड़िया

सुशील शुक्ल

एक कौए ने

एक कौए ने नीम तले
दातून निकाली
दाँत कहाँ है तेरे बोली,
नीम की डाली

कौआ बोला, वहाँ
जहाँ वो नदिया बहती है
वहीं एक पीपल पे
मेरी नानी रहती है

मुझे आज ही उन तक
ये पहुँचाना है
लाठी लेके उन्हें
घूमने जाना है

चित्रः कनक